12 विनियोजन/ निवेश गुणकInvestment Multiplier

Dr. Rajani Sontakke

12. निवेश गुणक

- गुणक ।
- अर्थ,
- गुणक का आकार
- गुणक की कार्यपद्धति
- गुणक की विशेषताएं
- गुणक की मान्यताएं एवं मर्यादाएं
- गुणक का रिसाव
- गुणक की आलोचना

12.विनियोजन / निवेश गुणक

- प्रस्तावना:
- कींस ने अपने रोजगार के सामान्य सिद्धांत में निवेश खर्च में वृद्धि और उससे समाज की आय में होनेवाली वृद्धि इनका संबंध स्पष्ट करते हुए स्पष्ट किया है कि, अगर समाज के निवेश खर्च में वृद्धि हुई तो, उस वृद्धि के फलस्वरूप समाज की आय में होनेवाली अंतिम वृद्धि निवेश खर्च की वृद्धि से कई गुना ज्यादा होती है। यह स्पष्ट करने के लिए कींस नें गुणक की संकल्पना रखी जो मूलत: कान्ह का गुणक यह "रोजगार गुणक" था।कींस का गुणक निवेश गुणक है।

गुणक का अर्थ

- गुणक का अर्थ है, आय में होनेवाली वृद्धि और निवेश में होनेवाली वृद्धि का गुनोत्तर है।

- गुणक = आय में वृद्धि ÷ निवेश में वृद्धि
- आय में वृद्धि = गुणक × निवेश खर्च में वृद्धि
- Y = k × I
- निवेश खर्च में वृद्धि = आय में वृद्धि ÷ गुणक
- I = Y ÷ K

गुणक का आकार

- कींस के गुणक सिद्धांत के अनुसार गुणक का आकार समाज की सीमांत उपभोग प्रवृत्ति पर निर्भर रहता है।
- सूत्र -
- गुणक = 1 ÷ 1 - सीमांत उपभोग प्रवृत्ति
- K = 1 ÷ १ - MPC
- K = गुणक, MPC = सीमांत उपभोग प्रवृत्ति
- सीमांत उपभोग प्रवृत्ति और सीमांत बचत प्रवृत्ति की जोड़ हमेशा १ होती है। MPC + MPS = १

गुणक की कार्यपद्धति

- अगर अर्थव्यवस्था के निवेश खर्च में वृद्धि हुई तो उस वृद्धि का प्रभाव प्रथम उपभोग खर्च पर होता है और उपभोग खर्च की वृद्धि के माध्यम से समाज की आय पर परिणाम होता है। यह परिणाम गुणक द्वारा स्पष्ट किया जाता है।

निवेश में वृद्धि

आय में वृद्धि

उपभोग मे वृद्धि

आय में वृद्धि

गुणक की अनुकूल प्रक्रिया

आय बढ़ने की अवस्था	उपभोग व्यय में वृद्धि	आय में वृद्धि
१ ली	....	१०० करोड़
२ री	१०००× १/२ = ५० करोड़	५० करोड़
३ री	५० × १/२ = २५ करोड़	२५ करोड़
४ थी	२५ × १/२ = १२.५ करोड़	१२.५ करोड़
५ वी	१२.५ × १/२ = ६.२५ करोड़	६.२५ करोड़
६ वी	६.२५ × १/२ =| ३.१२५करोड़	३.१२५करोड़
....	....	,..........
....	....	....
९, वी	,०	०
सभी अवस्थाए मिलकर	१०० करोड़ रुपए	२०० करोड़ रुपए

गुणक की विशेषताएं

1. गुणक का आकार समाज की सीमांत उपभोग प्रवृत्ति पर निर्भर रहता हैं।समाज की उपभोग प्रवृत्ति जितनीं ज्यादा उतना गुणक का आकार बड़ा हीगा।
2. गुणक सीमांत बचत प्रवृत्ति के विपरीत होता है।
3. गुणक की अनुकूल और प्रतिकूल प्रतिक्रिया होती रहती हैं।गुणक दोनों दिशाओं से कार्य करता रहता है।
4. गुणक के आकार पर आय प्रवाह में रिसाव का परिणाम हो सकता है।
5. जब अर्थव्यवस्था के खर्च में निरंतर और स्वतंत्र परिवर्तन होते है तब गुणक तत्व कार्यान्वित होता है।

गुणक की मान्यताएं एवं मर्यादाएं

1. औद्योगिक अर्थव्यवस्था।
2. अनैच्छिक बेरोजगारी का अस्तित्व।
3. उपभोग्य वास्तुओंकि उपलब्धता।
4. उपभोग वस्तुओंके उद्योग में अतिरिक्त उत्पादन क्षमता का अस्तित्व।
5. आय के वितरण में परिवर्तन नहीं होना चाहिए।
6. स्थिर किमते।
7. बंद अर्थव्यवस्था।

गुणक की मान्यताएं एवं मर्यादाएं

- 8. निवेश की पर्याप्तता
- 9. प्रवेग की उपेक्षा।
- 10. समाज की उपभोग प्रवृत्ति स्थिर होनी चाहिए।
- 11. समय विलंब।
- 12. निवेश का अन्य क्षेत्रों पर परिणाम।

गुणक का रिसाव Leakages of Multiplier

1. बचत।
2. पुराने ऋण की वापसी।
3. निष्क्रिय नकद रकम का संचय।
4. पुराने शेयर्स और प्रतिभूतियों की खरीद।
5. कीमत स्फीति।
6. करारोपण।
7. अपनिवेश।
8. आयात।
9. सरकारी प्रतिभूतियों की खरीद।
10. कंपनियों का अवितरित लाभ।

गुणक की आलोचनाएं Criticism on Multiplier

1. सीमांत उपभोग प्रवृत्ति स्थिर नहीं होती।
2. आकलन करने में कठिन।
3. समय विलंब।
4. यह सिद्धांत एक कल्पना है।
5. हिनार्थ अर्थप्रबंधन को अनावश्यक महत्व।
6. सरकारी निवेश का निजी निवेश पर परिणाम।
7. अर्धविकसित देशों में लागू नहीं होता।

गुणाक का महत्व Importance of Multiplier

- सैद्धांतिक महत्व

1. आय प्रसारण का महत्व।
2. निवेश के लिए महत्व।
3. बचत और निवेश में समानता।
4. कींस के बाद अर्थशास्त्र में महत्व।

- व्यवहारिक महत्व

1. व्यापरचक्र का स्पष्टीकरण।
2. आर्थिक नीति निर्धारण में महत्व।
3. पूर्ण रोजगार।
4. हीनार्थ अर्थप्रबंधन का महत्व।
5. मंदी की परिस्थिति से छुटकारा।
6. मुद्रास्फीति पर नियंत्रण।

Thank you